Date 22 06 21 Page No.

विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश

गद्यांश व्याख्या -

उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्। अकालप्रावृड् गुणकलहंसकानाम्। विसर्पणभूमिर्लोकापवादविस्फोटकानाम्।

अर्थ - (उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्) यह लक्ष्मी सज्जनों के व्यवहारों को हटाने के लिए बेंत की छड़ी है। ~~गुणरूपी~~ (अकालप्रावृड् गुणकलहंसकानाम्) गुणरूपी कलहंसों के लिए असामयिक वर्षा है। (विसर्पणभूमिर्लोकापवाद विस्फोटकानाम्) लोकनिन्दारूप फोड़ों के फैलने का अनुकूल स्थान है।

टिप्पणी -

लक्ष्मी के आने से शिष्ट आचरण का लोप हो जाता है अत: लक्ष्मी उत्सारण वेत्रलता अर्थात् तितरबितर करनेवाली बेंत की छड़ी का आरोप किया गया है। 'रूपक'।

मुहूर्तचिन्तामणि के अनुसार पौष, माघ, फाल्गुन तथा चैत्र में वर्षा का होना 'अकालवृष्टि' कहलाता है - 'यदि मास्सु चतुर्षु पौषमासादिषु वृष्टिर्हि भवेदकालवृष्टि:'। वर्षा ऋतु में राजहंस मैदानी इलाकों को छोड़कर मानसरोवर चले जाते हैं। किन्तु कभी-कभी वर्षा ऋतु के अतिरिक्त समय में भी अत्यधिक वर्षा होने से वर्षाऋतु के भ्रम में वे पृथ्वी से लुप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार अचानक लक्ष्मी की वर्षा हो जानेपर

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will." –Mahatma Gandhi

IND CamScanner App

Date ___/___/___

मनुष्य ऐसा भ्रान्त होता है कि उसके दया, उदारता आदि समस्त गुण नष्ट हो जाते हैं। अतः कवि ने यहाँ गुणों में कलहंसों का आरोप किया जो कि लक्ष्मी में अकालप्रवृद्ध के आरोप का निमित्त है। अतः यहाँ 'परम्परितरूपक' अलंकार है।

विसर्प एक सूखी खुजली का रोग है जिसमें ज्वर के साथ-साथ सारे शरीर में छोटी-छोटी फुंसियां हो जाती हैं और समय पर उचित चिकित्सा न होने पर विसर्प से प्रभावित त्वचा पर लुद्र लाल-काले रंग के फोड़े व विस्फोटक फूट निकलते हैं। यह विसर्प नामक रोग शनैः शनैः सारे शरीर में फैलने लगता है, इसीलिए इसे विसर्प या परिसर्प कहते हैं तथा शीघ्र फूट जाने के कारण इस पर होने वाले फोड़े विस्फोटक कहलाते हैं। आयुर्वेद में इस रोग को त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) और उसके संकररूप चार दोषों की प्रधानता के आधार पर वातिक पैत्तिक आदि भेद से सात प्रकार का माना गया है तथा उनके निदान, कारण एवं चिकित्सा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। (द्र० माधवनिदान, 52-53) आशय है यह है कि जैसे विसर्प से ग्रस्त त्वचा पर विस्फोटक चारों तरफ फैल जाते हैं उसी प्रकार लक्ष्मी लोकनिन्दा-रूपी फोड़ों का विस्तार करनेवाली भूमि व आश्रय है। इस प्रकार एक ओर 'विसर्पणभूमि' का अर्थ है 'सूखी खुजली वाली त्वचा' जो कि फोड़ों के फैलने का आधार या आश्रय है तथा लक्ष्मी के पक्ष में इसका अर्थ लोकनिन्दा का विशेषरूप से फैलने का स्थान अर्थात् कारण। लक्ष्मी के आते ही लोकापवादरूपी विस्फोटक सर्वत्र विसर्पण करने लगता है। जब लक्ष्मी

Date ___/___/_____

में विसर्पण भूमि का आरोप किया तो लोकापवाद में भी विस्फोटक का आरोप करना पड़ा है। इस प्रकार प्रथम आरोप द्वितीय आरोप का निमित्त है, अतः यहाँ 'परम्परितरूपक' है।

पदव्याख्या -

उत्सारणवेत्रलता = वेत्रस्य लता वेत्रलता (षष्ठी तत्पु०) उत्सारणाय वेत्रलता (चतुर्थी तत्पु०)। सत्पुरुषव्यवहाराणाम् = सन्तश्च ते पुरुषाः सत्पुरुषाः (कर्म०) सत्पुरुषाणां व्यवहाराः (षष्ठी तत्पु०) तेषाम्। अकालप्रावृड् = अकाले प्रावृट् (सप्तमी तत्पु०)। गुणकलहंसकानाम् = गुणा एव कलहंसाः गुणकलहंसाः (कर्म०) हंसा एव हंसकाः (स्वार्थे कन् प्रत्ययः) तेषाम्। विसर्पणभूमिः = विसर्पणाय भूमिः (चतुर्थी तत्पु०)। लोकापवादविस्फोटकानाम् = लोकेषु अपवादाः लोकापवादाः (सप्तमी तत्पु०) ते एव विस्फोटकाः लोकापवाद-विस्फोटकाः (कर्म०) तेषाम्॥ इति॥

IND CamScanner App